चंद्रगुप्त नाटक में इतिहास और कल्पना :—

जयशंकर प्रसाद एक ऐतिहासिक नाटककार एवं कवि हैं। प्रसाद जी इतिहास में जाते हैं साम्राज्यवादी इतिहासकारों द्वारा भारतीय इतिहास के साथ की गई तोड़-मरोड़ को ठीक करने के लिए। यूरोपीय इतिहासकार एरियन, प्लूटार्क आदि द्वारा सिकंदर और सेल्यूकस को भारत विजेता के रूप में चित्रित किया है और उनकी तुलना में चंद्रगुप्त को हीनतर प्रमाणित करना चाहा।

प्रसाद का 'चंद्रगुप्त' नाटक अपने इतिहास को सिर्फ गौरव के रूप में स्मरण करने के लिए नहीं है, बल्कि यह है — ऐतिहासिक तथ्यों को उसके सही स्वरूप में समझने के लिए। प्रसाद जी ने चंद्रगुप्त

मैं प्राय: सभी महत्वपूर्ण घटनाओं तथा पात्रों को नाटक में इतिहास सम्मत रखा है। सिकंदर सेल्यूकस, चंद्रगुप्त, चाणक्य, राक्षस, शकटार, नंद, पर्वतेश्वर — ये सभी महत्वपूर्ण पात्र ऐतिहासिक हैं। इसी तरह सभी महत्वपूर्ण घटनाएँ भी ऐतिहासिक है, जैसे - नंद वंश का पतन, सिकंदर और पर्वतेश्वर का युद्ध सेल्यूकस और चंद्रगुप्त का युद्ध, चंद्रगुप्त का राज्यारोहण, सिकंदर और सेल्यूकस की पराजय आदि।

चंद्रगुप्त नाटक में जो काल्पनिक पात्र और घटनाएँ हैं, वे भी संभाव्य लगते हैं। वे ऐतिहासिक पात्र हों या नहीं हों, लेकिन उनके ऐतिहासिक होने में संदेह करना मुश्किल है। सिंहरण एक काल्पनिक पात्र है वह मालव है। मालव से सिकंदर की सेना का युद्ध हुआ था, यह इतिहास सम्मत था। इसी तरह यह भी इतिहास सम्मत है। कि — जैसे ही सिकंदर ने सीमा पार किया तो गांधार नरेश उसके स्वागत में खड़े थे। उन्होंने पर्वतेश्वर से द्वेष के कारण सिकंदर से संधि करली थी।

सिंहरण का यदि देशद्रोही आंभिक से झगड़ा होता है तो यह संभाव्य है, क्योंकि गांधार के विश्वासघात के कारण ही मालवों को पराजित होना पड़ा था। और पर्वतेश्वर को भी। इसी तरह अलका एक काल्पनिक पात्र है, लेकिन ~~वीरता~~ वह भी संभाव्य की ही कोटि में है। उसकी वीरता सिकंदर की सेनाओं के प्रति कठ जाति की बालाओं की वीरता का स्मरण कराती है।

प्रसाद जी ने इतिहास के साथ कल्पना का मणिकांचन संयोग करके समसामयिकता को ध्वनित किया है। कोई भी रचनाकार इतिहास की तथ्यात्मक वास्तविकता को कल्पना के स्तर पर ही सर्जनात्मक बनाते हुए वर्तमान की भंगिमा देता है। प्रसाद जी ने जगह-जगह कल्पना का सहारा लेकर नाटकीय संघर्ष को तेज किया है, उसे अधिक स्वाभाविक व यथार्थपरक बनाया है। चाणक्य को देश निकाला की सजा इतिहास सम्मत नहीं है लेकिन उसके जरिये प्रसाद जी जहाँ चाणक्य को मगध निवासी बताने में सफल होते हैं, वहीं नंद के प्रति

चाणक्य के क्रोध को स्थायी आधार भी देते हैं। उसी तरह शकटार एक ऐतिहासिक पुरुष है, लेकिन किसी प्राचीन ग्रंथ में उसका उल्लेख नहीं मिलता कि सुवासिनी उसकी पुत्री थी, जो नंद की अभिनयशाला में अभिनेत्री थी। प्रसाद जी कल्पना की तन्मयता से ऐतिहासिक तथ्यों को कुछ इस तरह पेश करते हैं कि पूरा का पूरा वातावरण तत्कालीन सच्चाइयों का आईना बन जाता है।

प्रसाद जी ऐतिहासिक तथ्यों तथ्यों के साथ कम-से-कम छेड़छाड़ की है। ग्रीक इतिहासकार मैक्रिण्डल ने सिकंदर और दाण्डयायन के संवाद को उद्धृत किया है। सिकंदर ने दाण्डयायन के पास अपने सैनिकों को भेजा था। उसने आकर कहा कि सिकंदर आपसे मिलना चाहता है। दाण्डयायन ने कहा कि - "धरती के क्रोड से मेरी सारी आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाती है। मैं निर्द्वंद्व इस पृथ्वी पर भ्रमण करता हूँ ... सिकंदर मेरे शरीर को ले जा सकता है, लेकिन मेरी आत्मा अमर है।" मैक्रिण्डल के गद्दे इस

संवाद को प्रसाद जी ने अनुदित करके सीधे-सीधे रख दिया है। मालवों और क्षुद्रकों की संयुक्त सेना के साथ सिकंदर का युद्ध बिल्कुल ऐतिहासिक है। कार्टियस ने भी यह बात लिखी है। पर्वतेश्वर और सिकंदर का युद्ध वीरत्व सम्मत है। अंतर सिर्फ यही है कि ग्रीक इतिहासकारों का पोरस, मुद्राराक्षस का प्रवर्तक और प्रसाद का पर्वतेश्वर तीनों एक ही हैं। सिकंदर ने पर्वतेश्वर की वीरता की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। - "मैंने अलौकिक वीरता का स्वर्गीय दृश्य देखा।"

ग्रीक इतिहासकारों ने चंद्रगुप्त और सेल्यूकस की लड़ाई में सेल्यूकस को विजेता के रूप में चित्रित किया है, जबकि पतंजलि ने चंद्रगुप्त के जीतने की बात करते हैं। जस्टिन ने लिखा है कि नंद की पुत्री चंद्रगुप्त से प्रेम करती थी। प्रसाद ने उसे कल्याणी के रूप में रखा है, लेकिन वह पर्वतेश्वर से प्रतिशोध का बदला लेती हुई उसे मार कर अंत: ~~आत्महत्या~~ आत्महत्या कर लेती है। मतलब यह कि प्रसाद ने कल्याणी से चंद्रगुप्त का विवाह नहीं दिखलाया

है; इसलिए कि उन्हें दो संस्कृतियों के मिलन के निमित्त चंद्रगुप्त और कार्नेलिया के विवाह के लिए मार्ग प्रशस्त करना था।

निचोड़ यह कि प्रसाद ने इस नाटक में इतिहास के साथ कम-से-कम छेड़छाड़ की है और वह इसलिए कि चंद्रगुप्त नाटक में भारतीय स्वर्णिम इतिहास के साथ जो दुर्भावना प्रकट की गई थी, उन्हें उसका उत्तर देना था। लेकिन जहाँ-जहाँ उन्होंने कल्पना का उपयोग किया है - वहाँ-वहाँ रचना अधिक प्रासंगिक, समसामयिक और कलात्मक बन पाई है।